पुस्तक परिचय

बहुतेरे हैं घाट
मगर उतरों तो सही

संत पलटू का सूत्र है : जैसे नदी एक है, बहुतेरे हैं घाट।

सत्य की खोज का यह सारसूत्र है—ऐसा सूत्र जो तीर की भांति साधक के हृदय में सीधा प्रवेश करता है।

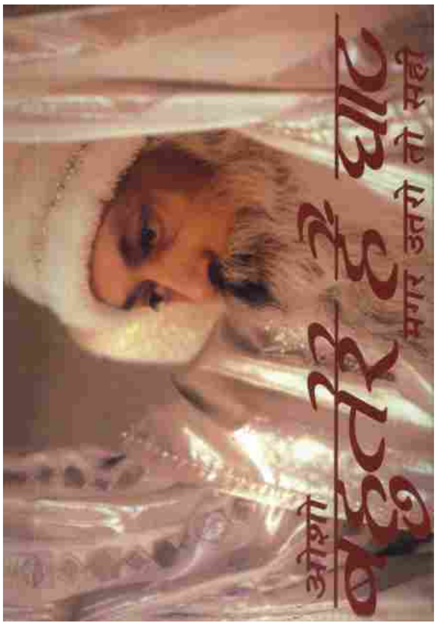

साधक जब अपनी सत्य की साधना प्रारंभ करता है तो उसे एक बौद्धिक ऊहापोह पकड़ लेती है। सत्य की इस विराट नदी पर अनेकानेक घाट बने हैं—और वे सब लुभाते हैं, आकर्षित करते हैं, वे सब अपने आश्वासन देते हैं, सही होने का दावा करते हैं। कोई किसी घाट की प्रशंसा-स्तुति में संलग्न है तो कोई किसी और घाट की निंदा में लगा है। ऐसी स्थिति में साधक कुछ सुनिश्चित नहीं कर पाता। अनेकानेक घाट देख कर साधक एक दुविधा का अनुभव करता है। कहीं गलत मार्ग पर भटक न जाऊं, यह आशंका निरंतर बनी रहती है। फलस्वरूप यात्रा और भी लंबी हो जाती है।

ओशो पलटू के माध्यम से यह कह रहे हैं कि मान लो, बहुतेरे हैं घाट। मत विवाद करो। जो जिस घाट से जाना चाहे, जाने दो। तुम्हें जो प्रीतिकर लगे उस पर चल पड़ो। यह नदी एक है। हमेशा यात्रा का ध्यान करो—चलना है। चलने वाले पहुंचते हैं। और अगर भटकते हैं तो भी पहुंच जाते हैं, क्योंकि हर भटकन सिखावन बनती है।

स्मरण रहे, घाटों की ऊहापोह में बैठ नहीं जाना है।

और यह भी समझ लेना उपयोगी होगा कि सही घाट की प्रत्यभिज्ञा के पूर्व व्यक्ति को घाट-घाट का पानी पीना होता है। अनेक मार्ग हैं। विविध द्वार हैं—ऐसे भी जो केवल द्वार प्रतीत होते हैं लेकिन वे द्वार नहीं दीवार हैं।

"इसके पहले कि कोई सही द्वार पर दस्तक दे, हजारों गलत द्वारों पर दस्तक देनी पड़ती है।...दस्तक दो! दस्तक तय कर देगी—'यह द्वार नहीं है, दीवाल है। आगे बढ़ो।' यूं तो भूल कर-करके, चूक कर-करके आदमी का निशाना अचूक हो जाता है। भूल करते-करते आदमी सीख जाता है। और इसके सिवाय कोई दूसरा मार्ग नहीं रहा है।"

स्पष्ट हुआ कि विचार की ऊहापोह में उलझ नहीं जाना है—कदम उठाना है।

ओशो इस यात्रा के प्रारंभ में पाथेय देते हैं : "एक ही कदम में यात्रा पूरी हो सकती है; बस साहस की बात है। एक क्षण में निर्वाण का अमृत तुम पर बरस सकता है; बस प्रेम से भरी छाती चाहिए। जिसको जो घाट प्यारा हो, कहना—जाओ, चलो, नाव में बैठो, यात्रा करो। और मुझे जो प्रीतिकर है उस पर मुझे चलने दो।"

और यह आवश्यक नहीं है कि जो द्वार, जो घाट किसी और को प्रीतिकर हो वह मेरे लिए भी उपयुक्त हो, आपके लिए भी उपयोगी हो। बहुत संभावना है कि आपके लिए उपयोगी घाट मेरे लिए सर्वथा उपयुक्त न हो।

सत्य की यह यात्रा नितांत निजी यात्रा है। इसलिए सर्वथा अनूठी है, एकांतिक है। निपट अकेले जाना है—और साहसपूर्वक जाना है। यही इसका रोमांच है, यही इसका आनंद है। यद्यपि बाट अनेक होंगे, घाट बहुतेरे होंगे, तथापि उपलब्धि एक है—एकमेव सत्य। फिर कोई विवाद नहीं है, क्योंकि फिर कोई घाट नहीं है। सब पीछे छूट गया—बाट, घाट, यात्रा और अंततः यात्री भी। शेष रही शुद्ध उपलब्धि! मात्र धार्मिकता! जिसका कोई विश्लेषण नहीं, कोई वर्णन नहीं।

ओशो की यह पुस्तिका 'बहुतेरे हैं घाट' एक रसपूर्ण निमंत्रण है ऐसी ही धार्मिकता की अनुभूति के लिए।